HISTORY Part - II

बलबन का मूल्यांकन

बलबन दिल्ली सल्तनत के शासक इल्तुतमिश का एक गुलाम था और तुर्को की प्रमुख जनजाति इल्बरी से सम्बंधित था, शुरू में वह सेवक के रूप में दिल्ली सल्तनत में शामिल हुआ इसके पश्चात् वह रजिया सुल्तान का शिकारगाह बना और उसके पश्चात् जब हांसी के अवर्नर बहराम शाह को हटाया गया तो वह वहाँ का अवर्नर बना वह सुल्तान नासिरउद्दीन मुहमूद के दाहिने हाथ के रूप में २० वर्ष तक कार्य करता रहा और इस दौरान उसने अपने सभी विरोधियों को जोकि साम्राज्य के अन्दर और बाहर एक प्रमुख ताकत के रूप में चर्चित थे समाप्त कर दिया अपने शासक के मृत्यु के बाद, बलबन दिल्ली सल्तनत के सिंहासन पर बैठा।

सल्तनत काल के इतिहास में बल का राज्यारोहण एक नयी प्रवृति और न युग के प्रारंभ का सूचक था। बलबन ने वह आधार निर्मित किया जिसने दिल्ली स

Scanned with CamScanner

उसने ....

के साम्राज्यवादी विस्तार को संभव बनाया।
बलबन की उपलब्धियों का मूल्यांकन उन समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में हो जिसका सामना बलबन को करना पड़ा था, किया जा सकता है।

बलबन ने राजतंत्र को एक गंभीर पेशा बनाया। वह उसने राजपद की गरिमा के लिए इस्लाम के कुछ सिद्धान्तों से भी समझौते किये। उसने राजत्व की ईरानी पद्धति को अपनाया। इसमें सुल्तान को 'अर्द्ध दैविक चरित्र' माना जाता था तथा मध्यस्थों की भूमिका को सीमित कर दिया। बलबन ने राजत्व को नियाबत ए खुदाई (ईश्वर की छाया) कहा था। स्वयं जिल-ए-इलाही (खुदा का प्रतिनिधि) की उपाधि धारण किया।

उसने अपने शासन काल में जमीं पैबोस और सजदा प्रथा की शुरुआत की जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति सुल्तान के सामने आने पर घुटनों के बल झुककर अपने सर से जमी को चूमता था और सुल्तान का सम्मान करता था।

Scanned with CamScanner

उसने चालीस के दल (चहलगानी) के प्रभाव को समाप्त कर दिया। उसने अपने शासन काल में किसी संस्था चाहे वह सेना हो शासनिक कार्य हो या प्रशासनिक कार्य हिन्दुओं की प्रविष्टियों की अनुमति नहीं थी।

बलबन ने राजत्व को एक सक्षम सैनिक आधार भी प्रदान किया। उसने राजकीय सेना का पुनर्गठन किया और एक नये विभाग 'दीवाने ए आरिज' की स्थापना की। वह सैनिकों की दक्षता और गतिशीलता बनाये रखने के लिए नियमित शिकार पर जाता था और इसी बहाने अपनी शक्ति और प्रदर्शन भी करता था।

बलबन चहलगानी की शक्ति तोड़ने में सफल रहा। कुछ महत्वपूर्ण अमीरों को मार डाला गया, कुछ को दूरस्थ क्षेत्र में तबादला कर दिया और शेष पर कड़े नियंत्रण लगा दिए गए। इसी तरह मुक्ती और 'वली' पर कड़े नियंत्रण स्थापित करने के लिए बलबन ने प्रान्तों में एक ख्वाजा नामक अधिकारी नियुक्त किया।

Scanned with CamScanner

बंगाल ...

जो प्रान्तों की आय - व्यय का आकलन करता था।

बलबन के सम्मुख मंगोल आक्रमण प्रमुख समस्या थी। मंगोलों की समस्या के समाधान के लिए उसने दोहरी नीति अपनायी। एक तरफ उसने मंगोल दरबार में अपने दूत भी भेजे और दूसरी तरफ उसने भारत की सुरक्षा के लिए उ० प० में दो सुरक्षा पंक्तियां स्थापित की।

राजपूतों का विद्रोह भी बलबन के सम्मुख एक महत्वपूर्ण समस्या थी। राजधानी के आसपास के मेवों विद्रोहियों ने कानून - व्यवस्था के लिए संकट की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। बलबन ने कठोरता से उसका दमन किया। बलबन ने राजपूतों के दमन के लिए उन क्षेत्रों में कुछ नए किले का निर्माण करवाया और पुराने किलों की मरम्मत करवायी। इसके परिणामस्वरूप सफलतापूर्वक राजपूत विद्रोहियों का दमन संभव हुआ।

Scanned with CamScanner

बंगाल का गवर्नर तुगरिल खाँ का विद्रोह भी बलबन के सम्मुख एक बड़ी समस्या के रूप में उपस्थित हुआ। बलबन ने तुगरील के विरुद्ध स्वयं अभियान किया यह एकमात्र ऐसा अभियान था जिसके लिए बलबन ने राजधानी छोड़ी। बलबन ने बड़ी ही कुशलतापूर्वक तुगरील का विद्रोह का दमन किया तथा तुगरील एवं परिवार के सदस्यों की नृशंस हत्या कर दी गयी। यहाँ बलबन का उद्देश्य था अमीरों के मन में राजकीय सत्ता के प्रति भय उत्पन्न करना था और इस उद्देश्य में वह निश्चय ही सफल रहा।

इस तरह से बलबन ने सल्तनत के विस्तार के बदले जीते गये प्रदेशों के संगठन पर जोर दिया। इसप्रकार हम देखते है कि बलबन ही दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संगठन कर्ता था।

किन्तु बलबन की उपलब्धियों पर सावधानी से विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि प्रथम बलबन की

Scanned with CamScanner

मृत्यु के तीन वर्षों के अन्दर ही उसके राजवंश का पतन हो गया। दूसरे बलबन ने राजत्व की एक ऐसी संकीर्ण अवधारणा प्रस्तुत की जिसमें रक्त की शुद्धता पर जोर दिया गया। निश्चय ही इसके परिणामस्वरूप राज्य की सामाजिक आधार सिमट गया और कुछ महत्वपूर्ण प्रतिभाएं राजकीय सेवाओं से कट गई। तीसरे मँगोल-नीति बलबन की असफल रही क्योंकि तमाम कोशिशों के बावजूद भी उत्तर पश्चिम में भारत की सीमा सिन्धु नदी से सिमट कर व्यास नदी तक पहुँच गया। चौथे बलबन ने स्थापना एक सुदृढ़ प्रशासनिक संगठन की ~~स्थापना~~ के क्रम में अत्यधिक क्रूरता का परिचय दिया। इससे निश्चय ही अमीरों एवं सामान्य जनता के मन में कुछ नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न किया।

किन्तु उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद भी बलबन की उपलब्धियाँ व्यापक रही। इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि बलबन ने ने दिल्ली सल्तनत को शक्तिशाली आधार प्रदान किया

Scanned with CamScanner